INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वरिष्ठ अध्यापक

RAJASTHAN - 2ND GRADE

PAPER – 1

BHAG – 3

शिक्षा मनोविज्ञान

<u>प्रस्तावना</u>

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान 2nd Grade (वरिष्ठ अध्यापक) (संस्कृत शिक्षा विभाग)"*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/tiy32p

Online Order करें - https://shorturl.at/coE19

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

शिक्षा मनोविज्ञान		
क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय	1
2.	कक्षा में अध्यापकों की भूमिका	10
3.	बाल विकास / शिक्षार्थी का विकास	13
4.	अधिगम (सीखना)	34
5.	व्यक्तित्व	49
6.	बुद्धि एवं सृजनात्मकता	58
7.	अभिप्रेरणा	71
8.	व्यक्तिगत विभिन्नताएं	73
9.	शिक्षण अधिगम	77
10.	समावेशी शिक्षा	86
11.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना - 2005	90
12.	आकलन, मापन एवं मूल्यांकन	94
13.	शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009	102
14.	अभिरुचि, स्मृति, चिंतन एवं कल्पना	105
15.	भारत की नई शिक्षा नीति 2020	110

अध्याय – 1

शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय

शिक्षा मनोविज्ञान :-

दोस्तों , शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा + मनोविज्ञान।

सर्वप्रथम शिक्षा क्या हैं :- शिक्षा शब्द की उत्पत्ति शिक्ष धातु से (संस्कृत भाषा) हुई है जिसका अर्थ होता है, सीखना।

शिक्षा अंग्रेजी भाषा के शब्द Education का हिन्दी रूपान्तरण है। जो लेटिन भाषा के Educatum शब्द से बना है जिसका अर्थ अंतः निहित शक्तियों का विकास करना शिक्षा संस्कृत के "शिक्ष" धातु से बना है जिसका अर्थ हैं सिखना।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ – प्रकाशित करने वाली क्रिया।

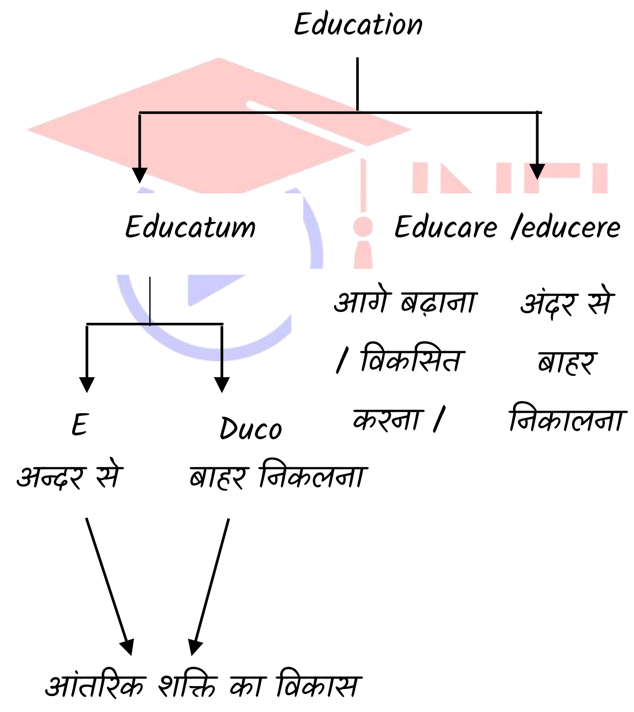

- एज्युकेशन शब्द की उत्पत्ती लैटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है।
- एडुकेटम का अर्थ - अंदर से बाहर निकालना।

- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :- वह शिक्षा जो निश्चित समय व स्थान से संबंधित होती है।
- शिक्षा का व्यापक अर्थ :- वह शिक्षा जो समय व स्थान से संबंधित नहीं होती है, अपितु आजीवन चलती रहती है।

शिक्षा के तीन आयाम -

शिक्षक छात्र पाठ्यक्रम

जॉन डी. वी. के अनुसार :- त्रिध्रुवीय -

1. शिक्षक
2. छात्र
3. पाठ्यक्रम

जॉन एडम्स के अनुसार :-

द्वि ध्रुवीय - शिक्षक _______ छात्र

3 R = लिखना, पढ़ना, गणना करना। (Reading, Writing, Arthamatic

4 H = मानसिक विकास - Head

भावात्मक विकास - Heart

क्रियात्मक विकास - Hand

शारीरिक विकास -Health

3 H का श्रेय / वर्तमान शिक्षा के विकास का श्रेय - पेस्टोलोजी।

परिभाषाएं :-

स्वामी विवेकानंद :- मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।

महात्मा गाँधी :- शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।

जॉन डी. वी :- शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।

डुनेविले के अनुसार :- शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।

पेस्टोलोजी :- शिक्षा व्यक्ति की जन्माजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।

- **अरस्तू –** शिक्षा का कार्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना है।"
- **प्लेटो –** शिक्षा व्यक्ति में शारीरिक , मानसिक , बौद्धिक परिवर्तन लाती है।"
- **जॉनलॉक-** जिस प्रकार फसल के लिए कृषि होती है उसी प्रकार से बालक के लिए शिक्षा होती है ।
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** "शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की उन्नति व समाज उपयोगिता को बढ़ावा देती है।
- **कॉलसेनिक के अनुसार-** "शिक्षा बालक में शारीरिक व मानसिक विकास करती है।"
- **रविचन्द्र टैगोर के अनुसार** -"शिक्षा वह ज्ञान है जो केवल सूचनाएं ही नहीं देता है अपितु मनुष्य के जीवन

और उसके संपूर्ण वातावरण के प्रति तादम्य (समायोजन) स्थापित करता है।"

शिक्षा की विशेषताएं :-

- जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

औपचारिक शिक्षा – जिसका समय व स्थान निश्चित हो। जैसे – स्कूल में शिक्षा

(ii) अनौपचारिक शिक्षा – जिसका स्थान व समय निश्चित न हो, जीवन पर्यन्त चलती है, जैसे – परिवार, समाज में।

(iii) निरौपचारिक शिक्षा – दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार व खुले विद्यालय या कॉलेज द्वारा शिक्षा।

महात्मा गांधी ने मातृभाषा शिक्षण का 3H सूत्र दिया

3H → Heart
→ Head
→ Hand

नोट :- जॉन डीवी ने पुस्तक शिक्षा एवं समाज में शिक्षा के तीन तत्त्व बताए जिन्हें त्रिमार्गीय प्रक्रिया कहते हैं -

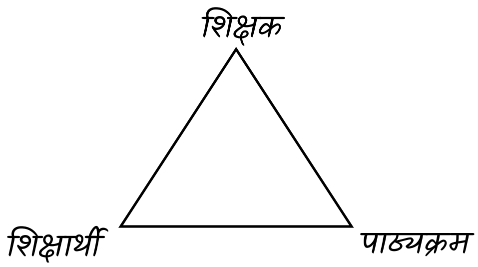

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान का विकास / उत्पत्ति – प्लेटो , अरस्तू जैसे दार्शनिकों ने मानव मस्तिष्क को समझने व जानने के लिए तथा शरीर से उसका सम्बन्ध समझाने की कोशिश की ।

हिप्पो क्रेटिस ने सबसे पहले इस विचार का प्रतिपादन किया कि मस्तिष्क चेतना का केंद्र है तथा समस्त मानसिक रोगों के कारणों का विवेचन किया । जैसे – कला , रक्त , कफ व पीला पित्त

- सुकरात ने विचार दिया की मनुष्य को स्वयं के बारे में सोचना चाहिए । प्लेटो ने (ई. पूर्व 5 वीं -4 वीं सदी) आत्मा ही परमात्मा का विचार दिया तथा अरस्तू ने 384 ई. पू. से 322 ई. में दर्शनशास्त्र में आत्मा का अध्ययन किया, यही आत्मा का अध्ययन आगे चलकर आधुनिक मनोविज्ञान बना, इसलिए अरस्तू को मनोविज्ञान का जनक माना जाता है तथा अरस्तू के काल से ही मनोविज्ञान जन्म माना जाता है ।
- मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता है।
- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते हैं –

1. **मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान**- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्ते, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।
2. **मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान** – यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के

समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वी शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. **मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।

4. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता है।यह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा है। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

वाटसन- "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।"

मैक्डूगल – "मनोविज्ञान व्यवहार एवं आचरण का विज्ञान है।"

स्किनर - "मनोविज्ञान व्यवहार एवं अनुभव का विज्ञान है।"

क्रो एवं क्रो - "मनोविज्ञान मानव व्यवहार एवं मानवीय संबंधों का अध्ययन है।"

वुडवर्थ - "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले व्यवहार का अध्ययन है।"

जेम्स ड्रेवर – "मनोविज्ञान शुद्ध विज्ञान है।"

बोरिंग एवं लेंगफील्ड - "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"

मैक्डूगल- मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

मनोविज्ञान के संप्रदाय

संरचनावाद संप्रदाय -

यह मनोविज्ञान का प्रथम सम्प्रदाय है जिसके प्रवर्तक विलियम वुण्ट, टिचनर आदि है।

इस सम्प्रदाय के अनुसार मनुष्य की चेतना में मानसिक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। चेतना में संवेदना, प्रत्यक्ष ज्ञान, कल्पना(भाव) आदि सम्मिलित है। संरचनावाद में अंतरदर्शनात्मक विश्लेषण के द्वारा मन और चेतना के स्वरूप को जानने का प्रयास किया जाता है।

प्रकार्यवाद संप्रदाय -

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक जॉन डीवी, विलियम जेम्स।

प्रकार्यवाद सम्प्रदाय के अनुसार मानसिक क्रियाएँ गतिशील और सप्रयोजनीय होती है।

प्रकार्यवादियों ने संपूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर जोर दिया और मनोविज्ञान तथा जीव विज्ञान में घनिष्ठ संबंध स्थापित किया ।

साहचर्यवाद संप्रदाय -

इस संप्रदाय की स्थापना जॉन लॉक ने की थी। इसके अंतर्गत स्पंदन तथा स्मृति में सम्बन्ध ज्ञात करने के साहचर्य को स्वीकार किया गया है।

व्यवहारवाद संप्रदाय -

इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक जे.बी. वाटसन को माना जाता है। -व्यवहारवाद सम्प्रदाय मूर्त यथार्थ तथ्यों की व्याख्या करता है। इसके अनुसार मनोविज्ञान प्रकृति विज्ञान की एक विशुद्ध, प्रयोगात्मक शाखा है। जिसका उद्देश्य व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण और उसके विषय में भविष्यवाणी करना है। इसके अनुसार परिवेश में आवश्यक परिवर्तन करके किसी भी व्यक्ति को कुछ भी बनाया जा सकता है।

गैस्टाल्ट वाद संप्रदाय -

इस सम्प्रदाय के प्रतिपादक वर्दाइमर, कोफ्का, कोहलर तथा कर्ट लेविन। इस संप्रदाय का जन्म जर्मनी में लगभग 1912 ई. में हुआ। गैस्टाल्ट शब्द का अर्थ है- समग्र रूप, आकृति, संरचना आदि। इस सम्प्रदाय के अनुसार मनोविज्ञान को व्यवहार तथा अनुभव के प्रकार का अध्ययन करना चाहिए।

प्रेरक सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय का प्रतिपादक विलियम मैक्डूगल है।

यह संप्रदाय मशीनी या व्यवहार-विचार के बिल्कुल विरुद्ध है। इसे प्रेरक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह प्रेरणा, कार्य करने या कार्य करने की इच्छा पर बल देता है।

उपचार की विभिन्न विधियों का अध्ययन किया जाता हैं। आज के युग में इस शाखा का महत्व दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा हैं।

16. समाज मनोविज्ञान समाज की उन्नति तथा विकास के लिए मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता हैं। समाज की मानसिक स्थिति, समाज के प्रति चिंतन आदि का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान में होता हैं।

17. किशोर मनोविज्ञान मनोविज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत किशोरों की मानसिक स्थिति, संवेग, रुचियां, अभिवृत्तियां, समस्याएं एवं शारीरिक विकास आदि के संबंध में अध्ययन किया जाता हैं। -

शिक्षा मनोविज्ञान -

मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करना ही शिक्षा मनोविज्ञान हैं।

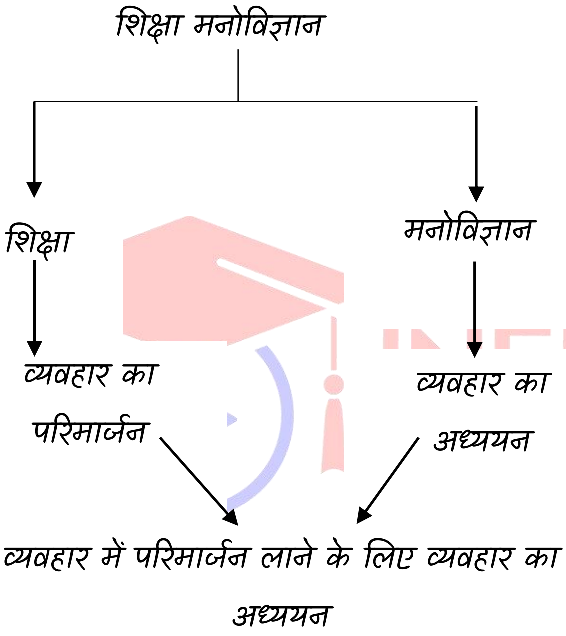

- शिक्षा मनोविज्ञान के जनक – थार्नडाईक हैं इनपर प्रकृति वादी रूसो का प्रभाव था ।
- रूसो की बुक emil में लिखा था – बालक एक पुस्तक के समान होता है अतः शिक्षक को उसे मद्योपांत तक पढ़ना चाहिए ।
- अमेरिकी शिक्षा शास्त्री जॉन डी. वी. के प्रयोसों से शिक्षण –प्रशिक्षण शुरू हुए ।
- भारत में शिक्षण –प्रशिक्षण का कार्य – 1920 में शुरू हुआ ।

कॉलसेनिक के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म प्लेटो से हुआ।

स्किनर के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अरस्तू से हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान को लोकप्रिय/प्रचलित बनाने का कार्य रूसों व फ्रोबेल ने किया।

रूसों का शिक्षा पर लिखा गया प्रसिद्ध ग्रंथ- 'एमील (Emile)हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान को मनोवैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने वाले विद्वान पेस्टॉलोजी एवं हरबर्ट हैं।

आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान का जन्म अमेरिका में 1900 ई० में हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान को एक अलग विषय के रूप में मान्यता 1920 ई. में अमेरिका में मिली।

American Psychological Association America द्वारा 1940 में शिक्षा मनोविज्ञान पर सबसे पहले शोध कार्य प्रारंभ किया गया।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं -

क्रो एवं क्रो "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों की व्याख्या एवं वर्णन करती हैं।"

कालसेनिक "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत मनोविज्ञान के अनुसंधानों व सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन किया जाता हैं।"

प्रो०एच0आर0 भाटिया- "शैक्षणिक पर्यावरण में किसी विद्यार्थी या व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन ही शिक्षा मनोविज्ञान हैं।"

स्किनर "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व शामिल हैं।"

स्किनर "शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से संबंधित हैं।"

स्किनर- "शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला हैं।"

- **स्टीफन –** "शिक्षा मनोविज्ञान बालक के क्रमबद्ध शैक्षिक विकास का अध्ययन है ।"

शिक्षा मनोविज्ञान के घटक (चर) 5 हैं -

1. शिक्षक
2. विद्यार्थी (सबसे महत्वपूर्ण घटक)
3. परिस्थितियां
4. पाठ्यचर्या
5. शिक्षण विधियां।

इन पांचों घटकों में विद्यार्थी (शिक्षार्थी) सबसे महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र-

एक बालक के विकास के दृष्टिकोण से वह सम्पूर्ण विषयवस्तु जो मनोवैज्ञानिक तरीके से जानी जाती है वह शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र कहलाता है –

- जीवन की आधारशिला - फ्रायड
- सजीव चिंतन की अवस्था

विशेषताएं –

(1) शारीरिक व मानसिक विकास की गति तेज होती है।

गुडएनफ, "बच्चे का प्रथम $3\frac{1}{2}$ साल में आधा (मानसिक) विकास हो जाता है।

(2) काल्पनिक जगत में निवास करना।

(3) दूसरों पर निर्भरता

(4) नार्सीसिज्म / आत्मप्रेम की अवस्था

(5) दोहराने की प्रवृति

(6) सीखने की प्रवृति

(7) मूल प्रवृत्ति आधारित व्यवहार

(8) सहज क्रिया करना

(9) काम प्रवृत्ति (स्थनपान व अंगूठा चूसना)

शिक्षा देना -

(i) मातृ भाषा सीखाना

(ii) उचित वातावरण देना / व्यवहार – सीखाना

(iii) आत्मनिर्भरता

(iv) अच्छी आदतों का निर्माण

(v) वास्तविक वस्तुओं द्वारा ज्ञान

(vi) क्रिया / खेल विधि

(vii) चित्र व कहानियां सुनाना

(viii) जिज्ञासा को पूर्ण करना

(ix) मूल प्रवृत्ति की संतुष्टि

iii. **बाल्यावस्था** (6 वर्ष से 11 वर्ष / 12 वर्ष)

विद्वानों द्वारा बाल्यावस्था की परिभाषा :-

फ्राइड- "बाल्यावस्था एक निर्माण काल होता है।

कॉल-ब्रश-"बाल्यावस्था जीवन का अनौखाकाल होता है।

रॉस- "बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता का काल कहा है।

किलपेट्रिक- बाल्यावस्था एक प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण का काल होता है।

जीन पियाजे – "मूर्त परिचालन की अवस्था होती है।"

स्ट्रेंग – 10 वर्ष की अवस्था तक ऐसा कोई खेल नहीं होता जिसे बालक नहीं खेलता हो ।

अन्य मुख्य नाम -

- विद्यालय की आयु
- सारस की आयु
- उत्पति की अवस्था / निर्माणकारी अवस्था
- गंदी अवस्था (dirty age)
- टोली की आयु (gang age)
- खेल की आयु (game age)
- मंद परिवर्तन काल ,
- अनोखा काल एवं निश्चिन्ता की अवस्था

विशेषताएं –

(i) बाल्यावस्था में शारीरिक व मानसिक विकास में स्थिरता आ जाती है।

(ii) वास्तविकता की अवस्था होती है।

(iii) बर्हिमुखी होते हैं ।

(iv) रचनात्मक की अवस्था

(v) संग्रह की अवस्था

(vi) काम क्रिया की प्रवृत्ति न्यूनतम

(vii) तार्किक / वैज्ञानिक रुचि

(viii) समलैंगिक / मित्रता व खेल

(ix) नेतृत्व गुण का प्रारंभ

(x) बाल्यावस्था में बालक झूठ बोलना, चोरी करना जैसे व्यवहार करता है।

(xi) निरुद्येश्य भ्रमण की अवस्था

(xii) इस अवस्था में अस्थायी चिन्ह गायब होकर स्थायी चिन्ह आने लगते है।

शिक्षा देना –

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन के अनुसार :- बाल्यावस्था वह समय है जब बालक के आधारभूत दृष्टिकोण, मूल्यों तथा आदर्शों का निर्माण बहुत कुछ सीमा तक हो जाता है

(i) भाषा विकास / ज्ञान पर बल

(ii) संवेगों पर अभिव्यक्ति / संवेगों का दमन।

(iii) जिज्ञासा की संतुष्टि

(iv) रचनात्मक संग्रह / रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन।

(v) खेल व क्रिया विधि कराना

(vii) रोचक व उपयोगी पाठ्यक्रम की व्यवस्था।

(viii) पर्यटन गतिविधि कराना तथा स्काउटिंग की व्यवस्था।

iv. **किशोरावस्था**

- सामान्यत: किशोरावस्था 12/13 वर्ष से 18 / 19 वर्ष होती है।
- रॉस / जॉन / शैले के अनुसार किशोरावस्था का कार्यकाल 12 वर्ष से 18 वर्ष होता है।
- कॉलसनिक के अनुसार – 12 वर्ष से 15 वर्ष तक पूर्वकिशोरावस्था तथा 17 वर्ष से 21 वर्ष तक उत्तरकिशोरावस्था होती है।
- WHO के अनुसार – 10 वर्ष से 19 वर्ष का काल किशोरावस्था होता है।

- हरलॉक के अनुसार 12 वर्ष से 14 वर्ष का काल प्यूबर्टी अवस्था का काल होता है। इसे यौन काल या वय सन्धि अवस्था कहते है।
- प्यूबर्टी अवस्था – लड़कियों में 11 वर्ष से 15 वर्ष में तथा लड़कों में 12 वर्ष से 17 वर्ष तक होती है।

विद्वानों द्वारा नाम -

(i) स्टेनले हॉल ने किशोरावस्था को एक अद्वितीय अवस्था कहा है।

(ii) किलपेट्रिक ने किशोरावस्था को जीवन का कठिन काल कहा है।

(iii) विग / हंड एनबीई ने किशोरावस्था को परिवर्तन कहा है।

(iv) जीन पियाजे ने किशोरावस्था को महान आदर्शों / वास्तविकता से अनुकूलन का समय कहा है।

परिभाषाएं -

हेडो कमिटी के अनुसार – 11 -12 वर्ष की आयु के बाद बालक –बालिकाओं की नसों में ज्वार उठने लगता है, जिसे किशोरावस्था के नाम से पुकारते हैं। इस समय इन्हें सही दिशा दी जाये तो ये सफलता को प्राप्त करते हैं।

जरशील्ड के अनुसार –किशोरावस्था बाल्यावस्था से निकलकर आई परिपक्वता की अवस्था है।

क्रो एवं क्रो – किशोरावस्था वर्तमान की शक्ति और भविष्य की आशा प्रस्तुत करती है।

कॉलसेनिक – किशोरावस्था के लोग प्रोढ़ों को अपने मार्ग में बाधा समझते हैं और वे उन्हें लक्ष्य की प्राप्ति से रोकते हैं।

रॉस – किशोरावस्था के लोग सेवा के आदर्शों की स्थापना एवं पोषण करते हैं।

अन्य नाम -

- तूफान, तनाव, संघर्ष की अवस्था
- भयभीत अवस्था
- teen एज
- कल्पना के जन्म का दिन
- कामूकता के जागरण की अवस्था
- क्रांतिक अवस्था
- उलझन / अटपटी अवस्था
- बसंत ऋतु की अवस्था
- सुनहरी अवस्था
- दुःखदायी अवस्था (स्टेन हॉल द्वारा)
- समस्या अवस्था (हरलॉक द्वारा)

किशोरावस्था के सिद्धांत – मुख्यतः किशोरावस्था के 6 सिद्धांत हैं-

(i) आकस्मिक विकास सिद्धांत

(ii) क्रमिक विकास सिद्धांत

(iii) सामाजिक प्रक्षेण सिद्धांत

(iv) मनोसामाजिक विकास सिद्धांत

(v) मनोलैंगिक विकास सिद्धांत

(vi) मानवशास्त्रीय विकास सिद्धांत

किशोरावस्था की समस्याएं

(i) शारीरिक परिवर्तन की समस्या

(ii) महत्वाकांक्षा की समस्या

(iii) समायोजन की समस्या

(iv) अस्थिरता

(v) अपराध प्रवृत्ति

(vi) नशाविकार / उपचार समस्या

(vii) आहार विकार की समस्याएं

✓ बिंज इटिंग डिसऑर्डर – हर समय अधिक भोजन करना बिना टेंशन के।

किशोरावस्था की विशेषताएं – किशोरावस्था के आते ही किशोर के शरीर में कठोरता आना, आवाज में भारीपन आना, लैंगिक अंगों का पूर्ण विकास तथा किशोरी में भी शारीरिक परिवर्तन, मासिक धर्म की शुरुआत होना इस बात का परिचय होता है कि उनमें परिपक्वता आ चुकी है, साथ ही उनके शरीर से एक विशेष प्रकार की गंध आने लगती है, जो उनमें कोतुहल पैदा करती है। इस कारण उनमें कई विशेषताएं पैदा होने लगती हैं -

(i) शारीरिक व मानसिक विकास अधिकतम हो जाता है।

(ii) दिवास्वप्न –कई प्रकार की कोरी कल्पनाएँ करने लगते हैं।

(iii) व्यक्तिगत / घनिष्ठ मित्रता

(iv) संवेगात्मक अस्थिरता

(v) नायक / वीर पूजा

(vi) समाजसेवा की भावना

(vii) स्वतंत्रता / विद्रोह की भावना

(viii) आत्मसम्मान / आत्म चेतना की भावना

(ix) काम प्रवृत्ति की परिपक्वता

(x) ईश्वर / धर्म में विश्वास

(xi) आर्थिक सुरक्षा व दिखावटी पन की भावना

(xii) विषमलिंगी की ओर आकर्षण

(xiii) नैतिक विकास होता है।

(xiv) विरोधी भाव उत्पन्न होने लगता है।

शिक्षा देना-

(i) निर्देशन व परामर्श निरन्तर देना चाहिए।

(ii) अभिप्रेरणा देना – (सकारात्मक रूप में)

(iii) व्यक्तिगत उदाहरण देना

(iv) शारीरिक व मानसिक विकास कराना

(v) संवेगात्मक विकास कराना

(vi) व्यवसायिक शिक्षा का निर्देशन

(vii) जीवन कौशल सिखाना

(viii) जीवन दर्शन की शिक्षा

(ix) महत्व को मान्यता

(x) आदर्शशील बनाना

विकास के विभिन्न आयाम –

1. शैश्वावस्था (जन्म – 6 वर्ष)

Infancy → In fant + Infarty

पूर्व शेश्ववस्था (जन्म- 2 वर्ष) | मध्य शेश्ववस्था (2-4वर्ष) | उत्तर शेश्वसथा (4-6 वर्ष)

2. बाल्यावस्था (6-12वर्ष)

पूर्व बाल्यावस्था (6-8 वर्ष) | मध्य बाल्यावस्था (8-10 वर्ष) | उ. बाल्यावस्था (10-12 वर्ष)

3. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

पू.किशोरावस्था (12-14 वर्ष) | म.किशोरावस्था (14-16 वर्ष) | उ.किशोरावस्था (16-18वर्ष

महत्वपूर्ण कथन :-

न्यूमैन के अनुसार :-

5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।

फ्रायड के अनुसार :-

बालक को जो कुछ भी बनाना होता है, वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।

रूसो के अनुसार :-

बालक के हाथ, पैर, नेत्र प्रारंभिक शिक्षक होते हैं।

थॉर्नडाईक के अनुसार :-

3 से 6 वर्ष के बच्चे अर्द्धस्वप्न अवस्था में होते हैं।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :-

20 वीं शताब्दी को बालकों की शताब्दी कहा है।

गुडएनफ के अनुसार :-

बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।

(a) शारीरिक विकास

1. शैश्वावस्था में शारीरिक विकास –

1. शैश्वावस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जो Jn + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था कहा जाता है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है। जो निरर्थक माना जाता है।
2. शैश्वावस्था मानव विकास की आधारशिला एवं नीव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
3. शैश्वावस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे जीवन का संचयी काल कहा जाता हैं।
4. इसका समय जन्म - 6 वर्ष तक होता हैं । जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता हैं ।

भार (Weight)

शैश्वावस्था में जन्म से लेकर अंतिम अवस्था अर्थात 6 वर्ष की आयु तक बालको का भार बालिकाओ की अपेक्षा अधिक हो जाता हैं ।

लम्बाई - जन्म के समय किसी बालक की लम्बाई $20\frac{1}{2}$ इंच तथा बालिकाओ की लम्बाई 20 इंच के आसपास होती है। किन्तु दोनों की लम्बाई में बहुत अधिक, अन्तर नहीं पाया जाता है।

- लेकिन शैशवास्था के अन्तर्गत अन्तिम समय में बालक की लम्बाई बालिका की अपेक्षा कुछ अधिक हो जाती है।

सिर एवं मस्तिष्क - शैशवावस्था के काल में जन्म के समय बच्चे के सिर का विकास कुछ शरीर के विकास के $\frac{1}{4}$ हो जाता हैं । जिस कारण बालक का सिर उसके शरीर की अपेक्षा अधिक बड़ा दिखाई पड़ता है। और बालक मासूम लगता है।

- जन्म के समय शिशु के सिर का कुछ भार लगभग 350gm के आसपास है।

दांत (Teeth)-

- बाल विकास की प्रक्रिया में किसी भी बालक का जन्म के पूर्व दांत बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। लेकिन दांत निकलने की प्रक्रिया जन्म के पश्चात् (8/9 माह में) प्रारम्भ होती है।
- किसी भी बालक या बालिका में जन्म के समय कोई भी दांत नही होता है। लेकिन जन्म से (6-7) माह में सबसे पहले नीचे के दांत निकलना प्रारम्भ होते हैं।

- इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओ का जो अस्थाई समूह निर्मित होता है। उसमें बालको की मित्रता बालको से तथा बालिकाओं की मित्रता बालिकाओं से होती है।
- इस अवस्था में निर्मित होने वाला अस्थाई समूह मुखा रुप से Tiffin shairing से निर्मित होता है।
- इस अवस्था के अस्थाई समूह में सम वयस्क बालक एवं बालिकाएँ होती है। साथ ही इस अवस्था के घनिष्ठ मित्र बालक एवं बालिकाओं का समूह अपनी ही कक्षा के मित्र बनाते हैं।
- इस अवस्था में प्रेम तथा स्नेह अपेक्षित बालक उदण्ड विरोधी विद्रोही हो जाते हैं ।
- बाल्यावस्था में सामाजिक विकास सबसे मुख्य विशेषता बालक एवं बालिकाओं में सामूहिक खेल खेलने की भावना होती है।

किशोरावस्था

किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओ का सामाजिक दायरा बढ़ जाता है, जिसका स्पष्ट प्रदर्शन उनके सामाजिक व्यवहार में दिखाई पड़ता है।

- किशोरावस्था में जो समूह बनता है। वो स्थाई समूह होता है।
- इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक परिवर्तन के कारण विपरीत लिंगी आकर्षण बढ़ जाता हैं जिसमे बालक की मित्रता बालिकाओ से तथा बालिकाओ की मित्रता बालको से हो जाती हैं।
- किशोरावस्था का स्वरुप मुख्य रूप से संगीत, नृत्य तथा पिकनिक आदि के लिए मुख्य होता है ।
- इस स्थाई समूह में किशोर किशोरियों में अन्नय भक्ति के भाव आ जाते हैं।
- इस अवस्था के सामाजिक विकास में मित्रत्व, उत्साह तथा सद्भावना आदि गुणों का विकास हो जाता हैं ।
- किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरिया भविष्य की चिंता एवं व्यवसायों का चुनाव प्रारंभ कर देते हैं ।
- इस अवस्था मे स्वतन्त्रता हनन एवं मतभेद के परिणाम स्वरुप विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं।
- इस अवस्था के अन्तिम समय तक किशोर, किशोरियो में राजनीतिक दलों की भावना, देश भक्ति, समर्पण एवं कल्याण इत्यादि विभिन्न सामाजिक गुणों का विकास हो जाता है।

(d) सांवेगिक विकास - प्रत्येक बालक तथा बालिकाएं अपने जीवन के सामान्य रूपों में प्रतिदिन सुख दुख, ईर्ष्या, द्वेष प्रेम, भय, कोध इत्यादि परिस्थितियो को प्रकट करते हैं।

- ये विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों ही किसी बालक के साम्वेगिक विकास को प्रकट करती हैं।
- इन संवेगो में जब पुण्टता के भाव आ जाते हैं। तब ये संवेग भाव रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
- संवेगात्मक परिक्षेत्रों में बालक तथा बालिकाओं में शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही पक्ष सम्मिलित होते हैं।

शैशवावस्था

शैशवावस्था के काल में संवेगात्मक विकास के परिक्षेत्रों में यह कहा जाता है। किसी भी बालक में संवेगात्मक विकास की क्रिया शैशवावस्था से ही सम्मिलित रहती है। तथा उनमें क्रमिक विकास होता रहता है।

शैशवावस्था के संवेगात्मक विकास के परिक्षेत्रो में ब्रीजेज का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। जिनके अनुसार जन्म के समय किसी भी बालक मे केवल उत्तेजना होती है। जबकि 2 वर्ष की अवस्था में किसी बालक या बालिका में संवेगों का पूर्ण विकास हो जाता हैं ।

जन्म के समय	**उत्तेजना**
3 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता
6 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध
12 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध आनंद, स्नेह, ईर्षा
24 माह की आयु में	उत्तेजना, कष्ट, प्रसन्नता, भय, घ्रण्णा, क्रोध आनंद, स्नेह, ईर्षा, उल्लास

इसके अतिरिक्त मैकडूगल ने 14 मूल प्रवृत्तियों के आधार पर 14 संवेग स्वीकार किये ।

- शैशवावस्था के प्रारम्भिक समय में तीव्रता रहती है। लेकिन धीरे-2 तीव्रता समाप्त हो जाती है। जैसे- 6-7 माह का बालक जब तक रोता है। जब तक उसकी भूख शांत नहीं हो जाती ।
- जबकि 6-7 वर्ष का बालक ऐसा व्यवहार नहीं करता है
- शैशवावस्था में संवेगात्मक व्यवहार शिशु के रोने चिल्लाने, हाथ पकड़ने आदि से प्रकट होता है।
- सिग्मण्ड फ्राइड के अनुसार, शैशवावस्था में बालक होता है। जिसे आत्मप्रेम या आत्मकेंद्र कहा जाता है। जो आगे चलकर लडको को odipus Complex (मात् प्रेम पित्र विरोध) एवं लड़कियों मे Electra Complex (पितृ प्रेम मात् विरोध) की भावना आ जाती हैं।

बाल्यावस्था

बाल्यावस्था के प्रारम्भिक समय में बालक एवं बालिकाओं में संवेग बने रहते हैं। जबकि उत्तर कालीन समय में ये संवेग धीरे-2 भावों के रूप में परिवर्तित होने लगते हैं।

बेसल वर्ष - जिस अधिकतम आयु स्तर के प्रश्नों को हल कर लेता है, वह उसका बेसल वर्ष माना जायेगा।

टर्मिनल वर्ष - जिस आयु स्तर के प्रश्नों को हल नहीं कर पाता है, वह उसका टर्मिनल वर्ष होगा।

बुद्धि लब्धि की सारणी :-

बुद्धि लब्धि	बालक का प्रकार	%
140-अधिक	प्रतिभाशाली (genius)	2%
120- 139	अतिश्रेष्ठ / तीव्र (superior)	7%
110 - 119	तीव्र / श्रेष्ठ बुद्धि (above average / verry superior)	16%
90-109 / 110	सामान्य / औसत (normal/ average/)	50%
80 - 89	(टर्मन के अनुसार- मंदबुद्धि - dull), पिछड़ा (backward)	16%
70 - 79	क्षीण बुद्धि / सीमांत मंद बुद्धि (feeble minded)	7%
50 - 70	मंद बुद्धि / मूर्ख (moron)	
25 - 50	मूढ़, हीन बुद्धि (imbecile)	2%
25 से कम	जड़ बुद्धि (idiot)	

note:- मंदबुद्धि बालकों को **मंगोलिज्म** की संज्ञा दी जाति है।

सृजनशील बालकों की बुद्धिलब्धि 110 मानी जाती है।

- भारत में सबसे पहले बुद्धि परीक्षण के निर्माता - C.H राईस, 1922 (हिंदुस्तानी बिने परफोरमेन्स पॉईन्ट स्केल)
- बुद्धि परीक्षण – इसकी शुरुआत अल्फ्रेड बिने फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक ने 1904 – 05 में प्रतिपादन किया।

बुद्धि परीक्षण के प्रकार

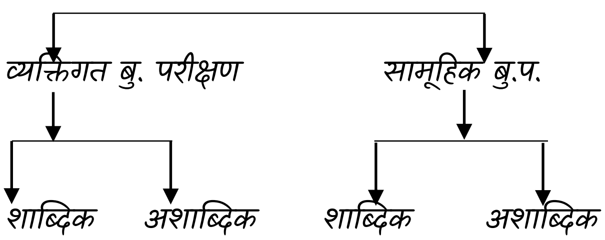

1. **व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण**- यह परीक्षण केवल एक व्यक्ति के लिए किया जाता है। इसके भी दो प्रकार है।
   (i) शाब्दिक व्यक्तिगत परीक्षण
   (ii) अशाब्दिक / क्रियात्मक व्यक्तिगत परीक्षण
2. **सामूहिक बुद्धि परीक्षण** - जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों का सामूहिक रूप से मापन या परीक्षण किया जाता है।

नोट :- शाब्दिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग पढ़े लिखे लोगों के लिए तथा अमूर्त बुद्धि का मापन करने में किया जाता है तथा अशाब्दिक - क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग छोटे बालक, निरक्षर, गूंगे, बहरे बालकों तथा मूर्त बुद्धि का मापन करने में किया जाता है।

(1) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण के प्रकार -

1. शाब्दिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण:-

1.1 बिने बुद्धि परीक्षण :- प्रतिपादक - अल्फ्रेड बिने 1905
- 3 से 15 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी हैं।
- इसमें 30 प्रश्न होते है

1.2 स्टैन फोर्ड बिने परीक्षण :- प्रतिपादक - टर्मन 1916
- 2 से 14 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी है।
- इसमें 90 प्रश्न होते है।

2. अशाब्दिक व्यक्तिगत क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण :-

1. भूलभुलैया बुद्धि परीक्षण- प्रतिपादक - S.D. पोर्टियस, 1924
2. कोह ब्लॉक डिजाइन परीक्षण प्रतिपादक - S.C कोह, 1923
3. पास एलॉन परीक्षण - प्रतिपादक - अलैक्जेण्डर पास, 1932
4. घन रचना परीक्षण
5. मैरिल पल्मर परीक्षण
6. मिनिसोटा पूर्व स्कूल स्केल।

नोट :- चंद्रमोहन भाटिया का कार्य बैटरी परीक्षण । इसमें 5 उपपरीक्षण होते हैं। 1955 (भारतीय व्यक्ति) यह निष्पादन परीक्षण है।

(2) सामूहिक बुद्धि परीक्षण के प्रकार

1. सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण -

(i) आर्मी अल्फा बुद्धि परीक्षण :- प्रतिपादक - आर्थर एस. ओटिस, 1917

(ii) सामान्य सेना वर्गीकरण परीक्षण

नोट :- पहला परीक्षण डॉ. जे. मैनरी द्वारा सामूहिक शाब्दिक परीक्षण (पहले भारतीय)

(iii) जलोटा ने 1950 में सामुहिक मानसिक बुद्धि परीक्षण - भारतीय व्यक्ति।
- 6 वर्ष के बच्चों के लिये उपयोगी।
- 100 प्रश्न।

2. सामूहिक क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण :-

1. आर्मी बिटा परीक्षण - प्रतिपादक - आर्थर S. ओटिस, 1919
2. शिकागो क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण
3. संस्कृति मुक्त परीक्षण :- प्रतिपादक - R. B कैटेल

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 12
आंकलन, मापन एवं मूल्यांकन

आंकलन (Assessment) एक अनौपचारिक प्रक्रिया होती है। इसका अभिप्राय विकास के किसी पहलू के आकलन से है।

मापन(Measurement) अंकिक मान प्रदान करने की प्रक्रिया है।

मूल्यांकन के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को प्रकट करने के लिए उन्हें संख्याओं में ढालना पड़ता है, जिसे मापन कहते हैं।

-मापन मूल्यांकन का अंग है तथा यह मूल्यांकन के समापन को स्पष्ट करता है।

स्टीवंस (Stevens)के अनुसार -" निश्चित स्वीकृति नियमों के अनुसार वस्तु को अंक प्रदान करने की प्रकिया मापन कहलाती है। "

अतः शिक्षा के क्षेत्र में मापन का अर्थ परीक्षा में परीक्षार्थियों को अंक प्रदान करने की प्रक्रिया से लगाया जाता है। व्यापक अर्थ में मापन द्वारा किसी भी अवलोकन को परिणात्मक (Quantitstivaly) रूप से व्यक्त किया जा सकता है।

- **मूल्यांकन (Evaluation)** – बालक के व्यक्तित्व के सभी पक्षों के विकास – स्तर का सही – सही मूल्य आँकने के लिए शिक्षाविदों नए एक नवीन उपागम को अपनाया है, जिसे "मूल्यांकन" की संज्ञा दी गई है।

एक विस्तृत एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जहां किसी मापन की उपयोगिता के संबंध में निर्णय या मूल्य प्रदान किया जाता है।

शिक्षा शब्दकोश के अनुसार – " किसी अवलोकन निष्पत्ति परीक्षण या किसी प्रत्यक्ष रुप से मॉपित प्रदत्त को मूल प्रदान करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है। "

कोठारी आयोग के अनुसार – मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है जो शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा शिक्षण उद्देश्यों के साथ घनिष्ठ संबंध है।

ब्लूम की अनुसार – "मूल्यांकन योग्यता नियंत्रण की व्यवस्था है जिसमें शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता की जाँच होती है।

NCRT के अनुसार – " मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किए गए हैं कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव कहां तक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। "

टोरगेशन एवं ऐडम्स (Torgerson and Adoms)- "मूल्यांकन से अभिप्राय है कि किसी प्रक्रिया या वस्तु का मूल्य आंकना इसलिए शैक्षिक मूल्यांकन से तात्पर्य किसी ऐसे निर्णय लेने से है जिससे यह पता चले कि कोई शिक्षण प्रक्रिया अधिगम अनुभव की सीमा तक सार्थक रहा। "

कार्टर वी. गुड (Carter V. Good) – " मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें किसी जांच स्तर को आधार बनाकर किसी वस्तु का मूल्य या कीमत निर्धारित करने या आंकने की बात की जाती है "।

क्वलन एवं हैन (Quillen and Hanna)-

"मूल्यांकन व प्रक्रिया है जिसमें विद्यालय द्वारा बालकों में होने वाले व्यवहार परिवर्तनों के संबंध में सूचना एकत्रित की जाती है और उनकी व्याख्या की जाती है। "

रेमर्स एवं गेज के के शब्दों में – " मूल्यांकन के अंतर्गत व्यक्ति या समाज दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय होता है, उसका ही प्रयोग किया जाता है।"

डान्डेर के अनुसार – "शैक्षिक उद्देश्यों को बालक द्वारा किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह जानने की व्यवस्थित प्रक्रिया को ही मूल्यांकन की संज्ञा दी जाती है।"

मूल्यांकन के प्रकार –

शिक्षा व्यापार को व्यापक सन्दर्भ में रखकर उसके तीन निश्चित चरण माने जाते जा सकते है : पाठपूर्व, पाठप्रक्रिया और पाठपश्च और तद्नुरुप भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में नियोजित विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन को भी वर्गीकृत किया जाता है।

मूल्यांकन के द्वारा जब गुणों का आंकलन हो जाता है तो फिर उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए मापन का सहयोग लेते हैं।

मूल्यांकन की विशेषताएं -

मूल्यांकन में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से संबंधित सभी प्रक्रियाओं द्वारा पूर्व की जाने वाली सभी प्रकार की भूमिकाओं को आंका जाता है अतः इसका क्षेत्र काफी व्यापक है परीक्षणों की भांति इसमें सिर्फ छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को नहीं मापा जाता अपितु छात्रों के विवाह में होने वाली सभी प्रकार के परिवर्तनों का मापन किया जाता है तथा इन परिवर्तनों की व्याख्या भी की जाती है।

1. मूल्यांकन निरंतर चलते रहने वाली प्रक्रिया है इस प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थी के व्यवहार में होने वाली सभी परिवर्तनों की समय अनुसार जांच होती रहती है।
2. मूल्यांकन संपूर्ण शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा यह पता चलता है कि पूर्व निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है तथा उसके आधार पर उद्देश्यों को नए सिरे से निश्चित किया जा सकता है।

मापन एवं मूल्यांकन की तुलना / अंतर-

मूल्यांकन	मापन
सतत्त प्रक्रिया है।	समय विशेष की प्रक्रिया है
बहुपक्षीय होता है।	एक पक्षीय होता है
व्यापक अवधारणा है।	संकुचित अवधारणा
गुणात्मक व संख्यात्मक	मात्रात्मक व संख्यात्मक
परिवर्तन शील क्रिया	अपरिवर्तन शील क्रिया
गुणों का आंकलन करता है	गुणों को मात्रात्मक प्रकट करता है
वैधता, विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता पाई जाती है।	इसमें यह संभव नहीं

मूल्यांकन के उद्धेश्य :-

- यह शिक्षा के विस्तृत उद्धेश्यों कों स्पष्ट करता है।
- यह पाठ्यक्रम या विषय - वस्तु में परिमार्जन कर उनमें सुधार लाता है।
- यह विभिन्न प्रकार की शिक्षण पद्धतियों एवं विधियों का प्रयोग कर शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाता है।
- यह वैज्ञानिक ढंग से शैक्षिक उद्धेश्यों, पाठ्यक्रम, कक्षा, अध्यापन एवं परीक्षण पद्धतियों को समन्वित करता है इस प्रकार यह शिक्षण प्रक्रिया कि प्रत्येक स्तर पर जांच भी करता है।
- यह समस्त विद्यालय कार्यक्रम का मूल्यांकन करता है, उनकी विशेषताओं एवं कमियों की ओर इंगित कर, कमियों कों दूर करता हैं। इनके माध्यम से दो या अनेक विद्यालयों के कार्यक्रमों की तुलना की जा सकती हैं।
- मूल्यांकन न केवल बालक का अध्ययन करता है बल्कि यह शिक्षक का भी मूल्यांकन करता है। अधिगम अनुभवों कों प्रदान करने में, निर्देश एवं कक्षाध्यापन की क्रियाओं को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक कहां तक दक्ष है इसका भी मूल्यांकन किया जाता है।
- इनके द्वारा बालक को सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- यह बालक, शिक्षक तथा प्रधानाचार्य, विद्यालय - प्रबंधक, शैक्षिक अधिकारी तथा सरकार सभी को सहायता प्रदान करता है जिसके फलस्वरूप ही गूढ़ शैक्षिक निर्णय लिया जाता है।

शैक्षिक मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान :-

1. उद्धेश्यों का निर्धारण एवं परिभाषा :- मूल्यांकन के प्रथम चरण में सामान्य एवं विशिष्ट उद्धेश्यों को निर्धारित एवं परिभाषित किया जाता है।
2. अधिगम अनुभवों को प्रदान करना :- शैक्षिक उद्धेश्यों को निश्चित करने के पश्चात एक ऐसी स्थिति का निर्माण किया जाता है। जिसके अंतर्गत बालक को उपयुक्त शिक्षण - अनुभव प्राप्त हो सके। यहाँ ऐसे साधनों विषय-वस्तु तथा शैक्षणिक परिस्थितियों का प्रयोग किया जाता है जिनसे शैक्षिक उद्धेश्यों की प्राप्ति सरलता पूर्वक हो सके। मूल्यांकन के इस चरण को दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

(अ) विषय- वस्तु का चयन :- मूल्यांकन के इस चरण में सर्वप्रथम विषय - वस्तु का चयन आवश्यक होता है इसके द्वारा उद्धेश्यों की प्राप्ति होनी चाहिए।

(ब) उपयुक्त अधिगम क्रियायों का चयन :- यहां शिक्षक का मुख्य कार्य शैक्षिक उद्धेश्यों एवं पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुये उपयुक्त अधिगम क्रियायों को प्रदान करना होता है।

3. व्यवहार परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन करना :- यहां विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक परीक्षणों तथा मूल्यांकन पद्धतियों - लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, निरीक्षण विधि आदि के माध्यम से शिक्षक यह मूल्यांकित करता है कि बालक के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ है।

मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रविधियां :-

1. परीक्षण प्रक्रियाएं :- परीक्षण के द्वारा एक समय में बालक के किसी निश्चित व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ये लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षण, प्रयोगात्मक परीक्षा, निष्पादन या बालक द्वारा निर्मित कृतियों के माध्यम से दिये जाते हैं।
2. स्वयं आलेख प्रविधियां :- प्रत्येक बालक अपने संबंध में अनेक सूचनाएं व अनुभव रखता है। वह अपने विषय में क्या और कैसे सोचता है, कौन - सी बातें उसे प्रसन्न रखती हैं तथा कौन - सी पीड़ा देती हैं। ये सूचनाएं विभिन्न उपकरणों- प्रश्नावली, आत्मकथा, व्यक्ति डायरी वार्तालाप, प्रत्यक्ष पूछे गये प्रश्न तथा साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित कि जा सकती हैं।
3. निरीक्षणात्मक विधियां :- बालक के संबंध में उसके निरीक्षणों एवं अनुभवों के आधार पर भी सूचनाएं एकत्रित की सकती निरीक्षण की प्रमुख विधियां है - वृतान्त अभिलेख, जांच सूची निर्धारण-मापनी, समाजयमितीय विधि तथा अनुमान कौन विधि है।
4. प्रक्षेपी मापक :- शिक्षा में प्रयोग आने वाली प्रक्षेपी मापक है- शब्द साहचर्य परीक्षण, वाक्य पूर्ति परीक्षण,

प्रसंगात्मक वोध परीक्षण, रोर्शा स्याही के धब्बों वाला परीक्षण आदि।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन

(Continuous Comprehensive Evaluation CCE)

सतत एवं समग्र मूल्यांकन से अभिप्राय विद्यार्थियों के उस मूल्यांकन से होता है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का ज्ञान होता है।

साधारण शब्द में मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो अनवरत चलती रहती हैं। मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक है। इसमें ज्ञान, अवबोध, ज्ञानोपयोग, अभिवृत्ति, अभिरुचि तथा कौशल सम्बन्धी सभी निर्धारित उद्देश्यों के अनुकूल वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों का मूल्य निर्धारित किया जाता है।

CCE एक ऐसी मूल्यांकन प्रणाली है जिसमें विद्यार्थी के विकास के सभी पहलुओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।इस प्रणाली में ना केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाता है बल्कि सह - शैक्षिक गतिविधियों का भी मूल्यांकन किया जाता है।यहां सतत का अभिप्राय निर्धारण की नियमिता, इकाई परीक्षण की आवृत्ति शैक्षिक कमियों का निदान, उपचारात्मक शिक्षण, परीक्षण तथा शिक्षक तथा विद्यार्थी के लगातार मूल्यांकन से है।

अतः सतत एवं समग्र मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है जो केवल परीक्षा पर बल नहीं देती अपितु संपूर्ण शिक्षण कौशलो एवं उद्देश्यों की प्राप्ति पर बल देती है।इसके द्वारा विद्यार्थी परीक्षा से पहले पढ़ने वाला दबाव कम होता है क्योंकि विद्यार्थी को पूरे वर्ष के दौरान कई परीक्षाओं से गुजरना होता है जिनमें पहले ली गई परीक्षा का पाठ्यक्रम पुनः दोहराया नहीं जाता है।

इस व्यवस्था में अंको को ग्रेड में बदला गया है तथा मूल्यांकन शिक्षित एवं सहशैक्षिक गतिविधियों की एक सुनियोजित श्रंखला द्वारा किया जाता है।

CCE में प्रमुख दो प्रकार की परीक्षा ली जाती हैं -

1. FA (Formative Assessment)/ प्रारंभिक या निर्माणात्मक परीक्षण
2. SA (Summative Assessment)/ योगात्मक परीक्षण

(1) FA (Formative Assessment)- इन परीक्षणों में विद्यार्थी द्वारा मौखिक परीक्षाओं व दिए गए कार्यों में उसके प्रदर्शन के स्तर द्वारा विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जाता है यह परीक्षण एक शिक्षण सत्र में 4 बार आयोजित किए जाते हैं और यह कुल ग्रेड के 40 प्रतिशत होते हैं। यह विद्यालय स्तर ही आयोजित होने वाले परीक्षण होते हैं।

(2) SA (Summative Assessment)- यह लिखित परीक्षण होता है जिसका आयोजन एक शिक्षण शत्र में 2 बार होता है।पहले दो प्रारंभिक परीक्षणों के बाद एक योगात्मक परीक्षण तथा अगले दो प्रारंभिक परीक्षणों के बाद दूसरा योगात्मक परीक्षण आयोजित किया जाता है प्रत्येक योगात्मक परीक्षण का अधिभार (Weightage) 30 प्रतिशत होता है।इसका आयोजन भी विद्यालय के द्वारा ही किया जाता है परंतु प्रश्नपत्र बोर्ड द्वारा तैयार किया जाता है तथा उत्तर पत्रों की जांच भी बोर्ड द्वारा कराई जाती है।

अतः CCE में परीक्षा का पैटर्न निम्नलिखित प्रकार से होता है -

FA-I	10%	Ist Team
FA-II	10%	(March-October)
SA-III	30%	
FA-III	10%	IInd Team
FA-IV	10%	(October - March)
SA-II	30%	

CCE के अंतर्गत किए जाने वाले मूल्यांकन को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है -

A. शैक्षिक क्षेत्र - अकादमिक निष्पत्ति क्षेत्र
B. सह -शैक्षिक क्षेत्र - जीवन कौशल अभिवृत्ति एवं मूल्य
C. सह -शैक्षणिक गतिविधियां - साहित्यिक एवं सृजनात्मक कौशल,वैज्ञानिक एवं ICT कौशल.शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा।

बिंदु प्रणाली / ग्रेडिंग व्यवस्था –वर्तमान में निम्नलिखित ग्रेडिंग के आधार पर बालकों को अगली कक्षा में प्रवेश दिया जाता है -

अंक(Marks)	ग्रेड(Grade)	बिंदु(Grade Point)
91-100	A1	10
81-90	A1	9
71-80	B1	8
61-70	B2	7
51-60	C1	6
41-50	C2	5
33-40	D	4
21-32	E1	-
Below20	E2	-

धारा -26 : किसी भी विद्यालय में 10% से अधिक पद रिक्त नहीं रह सकते।

धारा- 27 : चुनाव, जनगणना आपदा कार्यों के अलावा अध्यापक की ड्यूटी किसी भी अन्य सरकारी कार्यों में नहीं लगाई जाएगी।

धारा- 28 : कोई भी अध्यापक निजी ट्यूशन नहीं करवा सकता।

धारा- 30 : कक्षा 8 बोर्ड परीक्षा के लिए बाध्य नहीं

धारा- 37 SMC के खिलाफ कार्यवाही सम्बन्धी प्रक्रिया

बाल अधिकारों का संरक्षण

धारा- 31 : बाल संरक्षण अधिनियम -2005 के तहत राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग और राज्य बाल संरक्षण आयोग का गठन।

धारा -32 : बाल संरक्षण आयोग में अपील का प्रावधान।

धारा- 33 : राष्ट्रीय शिक्षा सलाहकार समिति का गठन।

धारा- 34 : राज्य शिक्षा सलाहकार समिति के सदस्यों का उल्लेख वर्तमान में सदस्य संख्या -15 है।

शिक्षक के निम्न दायित्व बताये गये हैं :-

1. स्कूल में नियमित आयेंगे।
2. पाठ्यक्रम संचालित करेंगे और समय पर पूरा करेंगे।
3. पढ़ाने का स्तर, गति और शिक्षण योजना बालकों के अनुसार तय की जायेगी। आवश्यक हो तो अतिरिक्त कक्षायें भी लेंगे।
4. माता - पिता व अभिभावकों के साथ संवाद करेंगे।
5. सरकार द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेंगे।

धारा-38 राज्य सरकार चाहे तो निजी हितो को ध्यान में रखते हुए संशोधन करवा सकती है।

(1) अध्यापकों की संख्या :-

1. कक्षा 1 से 5 तक :-

   60 छात्र पर = 2 अध्यापक

   61 - 90 छात्र पर = 3 अध्यापक

   91 - 120 छात्र पर = 4 अध्यापक

   121 - 150 छात्र पर = 5 अध्यापक

   151 - 200 छात्र पर = 5 अध्यापक व 1 मुख्य अध्यापक।

2. कक्षा 6 से 8 तक - प्रति 35 छात्रों पर = 1 अध्यापक अनिवार्य तथा निम्न विषयों के अध्यापक प्रति कक्षा

   गणित

   विज्ञान

   सामाजिक विज्ञान

   भाषा।

नोट :- अगर छात्र संख्या 100 या 100 से अधिक है तो पूर्णकालिक प्राधानाध्यापक होगा तथा निम्न विषयों के अध्यापक अल्पकालिक होंगे -

1. कला शिक्षा।
2. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा।
3. कार्यानुभव शिक्षा / नैतिक शिक्षा।
4. IT

(2) कार्यदिवस एवं शिक्षा घण्टे :-

कक्षा 1 से 5 तक - कुल शिक्षण घण्टे = 800 घण्टे।

कुल कार्य दिवस = 200 दिन।

प्रतिदिन शिक्षण कार्य = 4 घण्टे।

कक्षा 6 से 8 तक - कुल शिक्षण घण्टे = 1000 घण्टे।

कुल कार्य दिवस = 220 दिन।

प्रतिदिन शिक्षण कार्य = 4.30 घण्टे।

(3) विद्यालय के मानक :- विद्यालय के मापदंड को धारा 19 बताती है कि -

1. विद्यालय का सुविधायुक्त भवन जहां विधार्थियों की पहुंच आसानी से हो।
2. प्रत्येक मौसम के अनुकूल कक्षा - कक्ष।
3. प्रत्येक कक्षा के लिये अलग कक्षा - कक्ष।
4. प्रत्येक शिक्षक के लिये एक तैयारी कक्ष।
5. स्टाफ रूम।
6. व्याख्यान कक्ष (Seminar Hall)
7. प्रधानाध्यापक कक्ष।
8. भंडार गृह।
9. पुस्तकालय - जहां सभी विषयों की पुस्तके उपलब्ध हों तथा अखबार पत्र पत्रिकायें भी हों।

आर. टी. ई. अधिनियम की अन्य मुख्य बातें :-

1. यदि विद्यार्थियों के अधिकारों का हनन होता है। तो उसका निदान 3 माह में हो जाना चाहिए।
2. निजी विद्यालयों में अल्प आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिये 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित होंगी, यदि कोई विद्यालय इन आरक्षित बच्चों से फीस वसूल करता है, तो फीस का 10 गुणा (100000) रु. जुर्माना उस विद्यालय पर लगाया जायेगा।
3. यदि कोई विद्यालय बिना मानकों को पूरा करते हुए संचालित है तो उस पर पहले 100000 रु. का जुर्माना तथा उसके बाद 10000 रु. प्रतिदिन का व 15 दिन के पश्चात मान्यता रद्द की जा सकती है।
4. जो निजी विद्यालय सरकार से अनुदान व सहायता नहीं लेते, उन्हें निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध करवाने के बदले सरकार द्वारा तय राशि उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
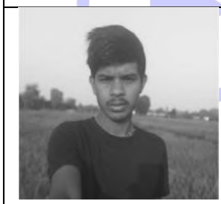	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
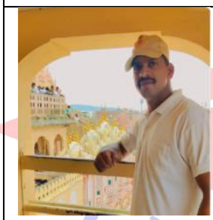	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/tiy32p

Online order करें – https://shorturl.at/coEI9

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE